सावधान !

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक ३४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २१ सितम्बर, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

टिप्पणियाँ

मेरी मूर्ति !

बम्बअीमें किसी आम जगहपर, दस लाख रुपये खर्च करके मेरी मूर्ति खड़ी करनेकी बात चल रही है। अिस सम्बन्धमें मेरे पास कअी आलोचना-भरे पत्र आये हैं। अुनमेंसे कुछ तो नम्र हैं और कुछ अितने गुस्सेभरे हैं, मानो मैं ही अपनी मूर्ति बनवाकर खड़ी करनेका गुनाह कर रहा होअूँ ! राअीका परबत बना देना शायद अिन्सानका स्वभाव है। असल बातकी छानबीन तो सिर्फ़ समझदार लोग ही करते हैं। अिस मामलेमें आलोचनाके लिअे जगह है। मुझे कहना होगा कि मुझे तो मेरा फोटो भी पसन्द नहीं। कोअी मेरी फोटो खींचता है, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। फिर भी कोअी कोअी खींच ही लेते हैं। मेरी मूर्तियाँ भी बनी हैं। अिसके बावजूद अगर कोअी पैसे खर्च करके मेरी मूर्ति खड़ी करनेकी बात करता है, तो यह मुझे अच्छा नहीं लग सकता। और खास करके अिस वक़्त, जब कि लोगोंको खानेको अनाज नहीं मिलता, पहननेको कपड़े नहीं मिलते। हमारे घरोंमें, गलियोंमें गन्दगी है। चालोंमें अिन्सान किसी तरह ज़िन्दगी बिता रहे हैं, तब शहरोंको कैसे सजाया जा सकता है ? अिसलिअे मेरी सच्ची मूर्ति तो मुझे रुचनेवाले काम करनेमें है। अगर ये रुपये, ऊपर बताये हुअे कामोंमें खर्च किये जायँ, तो जनताकी सेवा हो और खर्च किये हुअे रुपयोंका पूरा बदला मिले। मुझे अुम्मीद है कि यह पैसा अिससे ज्यादा लोक-सेवाके कामोंमें खर्च किया जायगा। कल्पना कीजिये कि अितने रुपये अगर नया अनाज पैदा करनेमें लगाये जायँ, तो कितने भूखोंका पेट भरे ?

नअी दिल्ली, १३–९–'४७ (गुजरातीसे)

मंत्रियोंकी ज़िम्मेदारी

मेरे पास अैसे बहुतसे खत आये हैं, जिनमें लिखनेवाले भाअियोंने हमारे मंत्रियोंके रहन-सहनको आरामतलब कहकर अुसकी कड़ी आलोचना की है। अुनपर यह अिलज़ाम लगाया गया है कि वे पक्षपातसे काम लेते हैं और अपने रिश्तेदारोंको ही आगे बढ़ाते हैं। मैं जानता हूँ कि बहुतसी आलोचना तो, आलोचकोंकी बेजानकारीकी वजहसे होती है। अिसलिअे मंत्रियोंको अुससे दुःखी नहीं होना चाहिये। सिर्फ़ दोष बतलानेवाली आलोचनामेंसे भी अुन्हें अपने लिअे अच्छा हिस्सा ले लेना चाहिये। यदि मेरे पास आये हुअे पत्र मैं अुनके पास भेज दूँ, तो अुन्हें ताज्जुब होगा। मुमकिन है कि अुनके पास अिनसे भी बुरे खत आते हों। चाहे जो हो, अिन खतोंसे मैं यही सबक़ लेता हूँ कि जहाँ तक सादगी, धीरज, अीमानदारी और मेहनत करनेका सम्बन्ध है, ये 'आलोचक' जनता द्वारा चुने हुअे सेवकोंसे दूसरोंके बनिस्बत ज्यादा अुम्मीद रखते हैं। शायद मेहनत और निज़ामको छोड़कर, और किसी बातमें हमें पुराने अंग्रेज हाकिमोंकी नकल नहीं करनी चाहिये। अगर अेक तरफ़ मंत्री लोग अुचित आलोचनासे फायदा अुठाने लगें और दूसरी तरफ़ आलोचना करनेवाले भाअी कोअी बात कहनेमें संयम और पूरी पूरी सचाअीका ख़याल रखें, तो अिस टिप्पणीका मक़सद पूरा हो जायगा। ग़लत बात कहने या बातको बढ़ा-चढ़ाकर कहनेसे अेक अच्छा मामला भी बिगड़ जाता है।

दिल्ली जाते हुअे रेलमें, ८–९–'४७
(अंग्रेजीसे)

मो० क० गांधी

डॉक्टर जोशी

दिल्लीके मशहूर सर्जन डॉ० जोशी ८ सितंबरको साम्प्रदायिक पागलपनके शिकार हुअे। दिल्ली आज पाकिस्तानसे आये हुअे लगभग २ लाख हिन्दू और सिक्ख निराश्रितोंको आसरा दे रही है। यहाँ पागल बने हुअे हिन्दू और सिक्खोंके द्वारा दंगोंमें बरबाद कर दिये गये हिस्सोंसे भागे हुअे मुस्लिम निराश्रितोंके लिअे भी छावनियाँ हैं। पंजाबकी भयंकर घटनाओंकी कहानियोंने यहाँके सारे वातावरणको जहरीला बना दिया है। जुल्मोंके शिकार बने लोग गुस्से और बदलेकी भावनासे भरे हुअे हैं। गांधीजी चिल्ला चिल्लाकर लोगोंको यह समझानेकी कोशिश कर रहे हैं कि सच्चा बदला बुरे बरतावका जवाब भले बरतावसे देनेमें है। हिन्दुस्तानके मुसलमानोंको अुनके पाकिस्तानी भाअियोंके पापोंकी सज़ा देना बिलकुल ग़लत है।

५ सितंबरको दिल्लीकी जनता गुस्सेसे पागल हो गअी और अुसने मार-काट शुरू कर दी। डॉ० जोशीका अस्पताल करोल बाग नामकी मुस्लिम बस्तीमें था। वहाँ वे पिछले १६ बरससे हिन्दुओं और मुसलमानोंकी अेक सी सेवा कर रहे थे। सारे अुत्तरी हिन्दुस्तानके बीमार अुनके पास अिलाजके लिअे आते थे। वे बड़े होशियार सर्जन थे, और अुनके अस्पतालमें चीर-फाड़का काफी बढ़िया सामान था। अुनकी यह बड़ी अिच्छा थी कि पोस्ट-ग्रेज्युअेट तालीमके लिअे अुनकी संस्थाका अुपयोग किया जाय। वे हिन्दुस्तानमें अमेरिकाके 'मेयो क्लिनिक्स'के ढंगकी संस्था कायम करनेका सुनहला सपना देखते थे। मेयो क्लिनिक्समें ही अुन्होंने सर्जरीकी शिक्षा पाअी थी। अुन्होंने अिस कामके लिअे देहरादूनमें जमीन भी खरीद ली थी। वे कहा करते थे — "सारी खोजों और कीमती आविष्कारोंका यश पच्छिमको ही क्यों मिले ? अुन्होंने यह सब कैसे सीखा ? हम भी अैसा करके अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं।" और अगर भगवान अुन्हें ज्यादा समय तक जिन्दा रखता, तो वे यह कर दिखाते। सर्जरी, और अुनके शब्दोंमें 'अिन्सानोंके स्वभाव और चाल-चलनका अध्ययन' ही अुनके जीवनकी अेकमात्र लगन थी। अपने डॉक्टरी काममें अुन्हें अिस तरहके अध्ययनका पूरा मौका मिलता था। डॉ० जोशी सुबहके ८से लेकर शामके ६ बजे तक या अिससे भी ज्यादा लगातार काममें जुटे रहते थे। अिसके बाद वे डॉक्टरी साहित्यका अध्ययन करते थे। वे बड़े रहमदिल थे और गरीबोंका मुफ्त अिलाज ही नहीं करते, बल्कि अुन्हें मुफ्त खाना देते और घर लौटनेके लिअे अपनी जेबसे किराया भी देते थे। पिछले साल मुझे कस्तूरबा ट्रस्टके डॉक्टरी कामके सिलसिलेमें देहरादूनके पास जौनसार बावर नामके अिलाकेमें पहाड़ी जातियोंके बीच जानेका मौका मिला था। मैंने हिन्दुस्तानके अुस दूरके कोनेमें भी गरीब पहाड़ियोंको

www.vinoba.in

डॉ० जोशीके बारेमें अुत्सुकतासे पूछताछ करते पाया। मेरे वहाँ जानेके पहले डॉ० जोशी वहाँकी अेक रियासतमें किसी बीमारका अिलाज करनेके लिअे गअे थे। अुन गरीबोंमें चीर-फाड़के कुछ दिलचस्प केस मिलनेसे वे बीमारोंको अपने साथ दिल्ली ले आये थे। और यहाँ अुनका अिलाज करके अपने पैसेसे अुन्हें घर लौटा दिया था। कुदरती तौरपर अिसका यह नतीजा हुआ कि जौनसार बावरकी पहाड़ी जातियाँ डॉ० जोशीको अपना दोस्त और बचानेवाला मानने लगी थीं।

जब करोल बागमें अुनके अस्पतालके पड़ोसमें दंगा शुरू हुआ, तो बहादुर होनेके कारण डॉ० जोशी बाहर निकले और घूम-घूमकर अपने बीमारोंको ढाढ़स बँधाने लगे। मुलाकात लेते समय ही अेक गोली अुनके माथेमें आकर लगी। गोली कहाँसे और कैसे आअी, अिस बारेमें कअी मत हो सकते हैं, लेकिन संभावना यही है कि अिरादेसे अुनकी हत्या की गअी। दूसरी गोली अुनके दिलमें लगी और तीसरी जाँघमें। अुनके बेजान शरीरको हटानेकी कोशिश करते हुअे तीन आदमी गोलीसे मार दिये गये। डॉ० जोशीके मरनेसे राष्ट्रको और मनुष्य-जातिको भारी नुक़सान पहुँचा है। हम आशा करें कि डॉ० जोशीके मर जानेसे सर्जरीकी तरक्कीके लिअे देहरादूनमें अेक संस्था खोलनेका अुनका विचार छोड़ नहीं दिया जायगा। योग्य डॉक्टरोंको आगे आकर अुनकी योजनाको अमली रूप देना चाहिये। यह हिन्दुस्तानके अुस सपूतकी लायक और सच्ची यादगार होगी।

नअी दिल्ली, १३-९-'४७
(अंग्रेजीसे)

सुशीला नय्यर

हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा

हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा, वर्धाकी कार्य-समितिकी अेक बैठक ता० ६-९-'४७ को नअी दिल्लीमें हुअी। अुसमें डॉ० राजेन्द्रप्रसाद (सभापति), आचार्य काका कालेलकर, श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, श्री मगनभाअी देसाअी, श्री पेरीन बहन कैप्टन, श्री राजकुमारी अमृतकौर और अमृतलाल नाणावटी हाज़िर थे।

देशकी आजकी हालतमें सभाकी नीतिके बारेमें चर्चा हुअी। अिस बैठकमें महात्मा गांधी हाज़िर नहीं रह सकते थे, अिसलिअे सभासदोंकी रहबरीके लिअे अुन्होंने ठहरावका अेक मसविदा कलकत्तासे श्री काका कालेलकरजी के ज़रिये भेजा था। वही मामूली फेरफार के साथ मंजूर हुआ। ठहराव अिस तरह है:—

"हिन्दुस्तानके दो हिस्से हो गये हैं। अेक का नाम पाकिस्तान है, दूसरेका अिण्डियन यूनियन। क्या हमारे दिलोंके भी टुकड़े हो गये हैं? कोअी कहते हैं, "हाँ", कोअी कहते हैं, "ना"। अिसीलिअे यह भी सवाल पैदा हुआ है — क्या हुकूमतें दो बनी हैं, तो राष्ट्रभाषा भी दो बनेंगी? अैसा भय तो रहता है। आन्दोलन हो रहा है कि यूनियनकी नागरी लिपिमें हिन्दी और पाकिस्तानकी अुर्दू लिपिमें अुर्दू राष्ट्रभाषा हो।

"अगर यह बात दोनों टुकड़ोंमें क़बूल हो गअी, तो साफ सबूत होगा कि दोनोंके दिल भी जुदा हैं। अिससे अधिक दुःखकी बात क्या हो सकती है? अिस दुःखको रोकना हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभाका खास फर्ज़ हो जाता है। और अैसी आशा रखी जाती है कि हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभाके सभासद और हिन्दुस्तानी भाषाके प्रचारक, हिन्दुस्तानीको, जो नागरी और फारसी दोनों लिखावटोंमें लिखी-पढ़ी जाती है, फैलानेमें भरसक मेहनत करेंगे।

"सभाकी प्रचार और परीक्षाकी नीतिमें कोअी फर्क करनेकी ज़रूरत नहीं है।"

सभाके मंत्री श्री श्रीमन्नारायणजीने सभाके कामके लिअे काफी समय न दे सकने के कारण मंत्रीपदसे स्तीफा दे दिया, जो मंजूर किया गया और अुनकी सेवाके लिअे धन्यवाद दिया गया। श्री अमृतलाल नाणावटीको मंत्रीपदपर नियुक्त किया गया।

अमृतलाल नाणावटी
मंत्री, हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा

www.vinoba.in

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

कलकत्ता, ३०-८-'४७

भाअीचारेकी कसौटी

गांधीजीने कहा, यह सभा शहीद साहबको वोट देनेवाले लोगोंके हिस्सेमें हो रही है। अिसलिअे मुझे खुशी है कि मुझसे बरासतका मुआअिना करनेकी आशा की जाती है। मैं देखता हूँ कि यहाँ पाकिस्तान या मुस्लिम लीगका झण्डा नहीं अुड़ रहा है। लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूँ कि बरासतके हिन्दुओंने अपने रिवाजसे अेक कदम आगे बढ़कर अपने मुसलमान भाअियोंसे यह आग्रह क्यों नहीं किया कि वे तिरंगे झण्डेके साथ ही पाकिस्तानका झण्डा भी फरकावें? अिसका यह मतलब नहीं कि मुसलमान अपने हिन्दू भाअियोंपर पाकिस्तानका या मुस्लिम लीगका झण्डा जबरन लाद दें। मुसलमानोंकी ज्यादा तादाद वाले हिस्सेमें भी मैं यही नियम लागू करूँगा। मुसलमानोंसे मैं यह कहूँगा कि अगर आपके बीचमें कोअी अकेली भी हिन्दू लड़की हो, तो आप अुसे तिरंगा झण्डा फरकाने और रामधुन गानेका बढ़ावा दीजिये। अिस तरहका दोनों जातियोंका राजी-खुशीका बरताव हिन्दू-मुस्लिम भाअीचारेकी अचूक निशानी है। यह भाअीचारा और दोस्ती अितनी मजबूत होगी कि बुरे से बुरे खिंचावके बाद भी वह नहीं टूटेगी। बेशक, हम पंजाबमें चल रही भाअी-भाअीके बीचकी घरेलू लड़ाअीके बारेमें भयंकर बातें रोज रोज सुनते हैं। पूरबी पंजाबमें मुसलमानोंका और पच्छिमी पंजाबमें हिन्दुओं और सिक्खोंका रहना मुश्किल हो गया है। तो क्या करोड़ोंकी तादादमें लोगोंको अेक हिस्सेसे दूसरे हिस्सेमें बदलना होगा? अिस जंगलीपन और हैवानियतकी बाढ़को रोकनेका यही रास्ता है कि बंगालके दोनों हिस्सोंके हिन्दू और मुसलमान अपने दिमागका समतोल बनाये रखें और अपनी अटूट दोस्तीसे देशकी सारी जातियोंको अेक साथ रहने और जीनेका पाठ सिखायें। आपसी लड़ाअी और अेक दूसरेसे अलग रहनेका रास्ता बरबादी और गुलामीका रास्ता है। अगर दोनों जातियोंके बीच दिली दोस्ती हो, तो मैं मुर्शिदाबाद और मालदाके मुसलमानोंकी तरह बहुमतवाले मुसलमानोंके पच्छिमी बंगालमें मिलाये जानेके विरोधको या बहुमतवाले हिन्दुओंके पाकिस्तानमें मिलाये जानेके विरोधको समझ नहीं सकता। यह दोस्तीकी नहीं, बल्कि आपसके शोभा न देनेवाले अविश्वासकी निशानी है।

गुरखा-लीग

कलकत्ताकी गुरखा-लीगकी तरफ़से जो खत मुझे मिला है, अुसमें लिखा है कि जिस भाअीके खतके आधारपर आपने दार्जिलिंगके गुरखाओंको अपनी सलाह दी है, अुन्होंने आपको गुरखा-लीगके कामकी गलत रिपोर्ट दी है। अुसमें आगे लिखा है कि हम गुरखे भी दूसरे लोगोंकी तरह हिन्दुस्तानके नागरिक होनेका दावा करते हैं। दार्जिलिंगमें आकर रहनेवाले बंगालियों या मारवाड़ियोंसे हमें किसी तरहकी नफरत नहीं है। लेकिन हमें विश्वास है कि अगर बंगाली या मारवाड़ी लोग हमें दबाना या हमारे मालिक बनना चाहेंगे, तो हमारे जैसा डर आपके दिलमें भी पैदा होगा। ये बंगाली या मारवाड़ी अपनी पंडिताअी या दौलतका घमण्ड न करें और हमारे साथ बोझ ढोनेवाले जानवरोंका-सा बरताव न करें। क्या आप यह आशा नहीं रखेंगे कि हिन्दुस्तानके सब लोग बराबर हों और बंगाली हमें पढ़ा-लिखाकर ऊँचे अुठायें और मारवाड़ी हमें अीमानदारीसे व्यापार करनेका राज़ बतायें? अिस खतमें कही गअी गुरखा लोगोंकी बातोंका मैं बिना हिचकिचाहटके पूरा पूरा समर्थन करता हूँ और यह आशा रखता हूँ कि अुस सुन्दर पहाड़ी पर जो बंगाली और मारवाड़ी जा बसे हैं, वे अपने अच्छेसे अच्छे गुणोंका फायदा गुरखा भाअियोंको भी अुठाने देंगे और अिस तरह अुन्हें यह विश्वास करा देंगे कि वे गुरखोंको चूसनेवाले नहीं, बल्कि अुनके दोस्त और सेवक हैं।

रोटी और कपड़ेके लिअे मज़दूरी

मुझसे मिलने के लिअे आये हुअे कअी भाअियोंके साथ चर्चा करके निर्मलबाबूने जो सवाल तैयार किया है, अुसका जवाब मैं अब देता हूँ। सवाल अिस तरह है : 'रोटीके लिअे मज़दूरी करनेके सिद्धान्तसे आपका क्या मतलब है और मौजूदा परिस्थितिमें अिस सिद्धान्तको किस तरह लागू किया जा सकता है?' रोटीके लिअे मज़दूरी करने के सिद्धान्तका अर्थशास्त्र, ज़िन्दगीका चेतनाभरा रास्ता है। अिसका मतलब यह है कि हरअेक अिन्सानको अपने खाने और अपने कपड़ोंके लिअे खुद जिस्मानी मेहनत करनी चाहिये। अिस रोटीके लिअे मज़दूरीके सिद्धान्तकी कीमत और अुसकी ज़रूरतको मैं अगर लोगोंके गले अुतार सकूँ, तो कहीं भी खाने या कपड़ेकी तंगी न रहे। श्रद्धाके साथ अितना कहनेमें मुझे ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं होती कि अगर लोग खेतोंमें जाकर मज़दूरी न करें और खुद न कातें या न बुनें, तो अुनके भूखों मरने या नंगे घूमनेमें ज़रा भी बुराअी नहीं है। हम अखबारोंमें पढ़ते हैं कि आज सारा हिन्दुस्तान कपड़ेके बिना नंगे रहने और खुराकके बिना भूखों मरनेके किनारे खड़ा है। अगर लोग मेरी योजनाको मंजूर करलें तो वे जल्दी ही देखेंगे कि हिन्दुस्तानमें काफ़ी खुराक और आम जनता द्वारा खुद तैयार की हुअी काफी खादी आसानीसे मिल सकती है। बेशक, अिस काममें आम जनताको यह सीखनेमें मदद देनेकी ज़रूरत है कि वह किस तरह अच्छे-से-अच्छे तरीकेसे होशियारीके साथ ज़मीनका अुपयोग करे। साथ ही अुसे कातना और बुनना सिखानेवाले शिक्षक और ये दोनों काम करनेके साधन मिलने चाहियें। बंगालमें पानी पुराने के काममें गहरा रस लेने वाले यहाँके भूतपूर्व गवर्नर मि० केसी से अपने अिस तरीके के बारेमें चर्चा करते हुअे मुझे संकोच नहीं हुआ था। मि० केसीकी योजना बहुत बड़ी है और अुसपर अमल करनेमें बरसों और लाखों रुपयोंकी ज़रूरत है। अिससे अुलटे मेरा प्रोग्राम पूरी तरह कामका होते हुअे भी लम्बा चौड़ा या खर्चीला नहीं है।

कलकत्ता, ३१-८-'४७

धनवानोंका फ़र्ज़

गांधीजी और शहीद साहब पहले हिन्दू, मुसलमान और यूरोपियन धनिकोंसे ग्राण्ड होटलमें मिले और अुनसे अपील की कि वे लोग बरबाद हुअी बस्तियों और दूसरे मकानोंको फिरसे बनानेके लिअे ज़रूरी रुपया दें। वहाँ क़रीब घंटाभर ठहरनेके बाद वे बेघमरी पार्कमें प्रार्थना-सभा करनेके लिअे रवाना हुअे। धनवानोंके सामने दिये गये अपने भाषणमें गांधीजीने कहा कि मैं आपके पास भिखारीकी तरह आया हूँ। अपनी पढ़ाअी खतम करनेके बाद जब मैंने अपना जीवन शुरू किया, तो मुझे पता चला कि मुझमें धनवान और ग़रीब दोनोंसे समान रूपसे भीख माँगनेकी योग्यता है। मुझे अुम्मीद है कि मेरी अपील फ़िजूल नहीं जायगी। बरबाद हुअे मकानोंको फिरसे खड़े करने और शरणार्थियोंको फिरसे बसानेके लिअे दो रास्ते हैं — या तो सरकार अिसके लिअे रुपया खर्च करे, या कलकत्ताके धनवान लोग। मेरी रायमें अगर सरकारको अिसके लिअे रुपये खर्च करने पड़े, तो अुसमें कोअी विशेषता नहीं होगी। अगर धनवानोंने यह फ़र्ज़ अदा किया, तो अुसकी दुगुनी विशेषता होगी। अिस तरह अेक तो वे नागरिकोंके नाते राज़ी-खुशीसे अपना फ़र्ज़ अदा करेंगे और दूसरे, अलग-अलग जातियोंके बीच दोस्ती होनेका यह अेक अच्छा खासा सबूत होगा।

सभाअें भरना बेशक ज़रूरी है, मगर वे ही सब कुछ नहीं हैं। स्थायी दोस्तीका रास्ता तो लोगोंको फिरसे अुनकी जगहों पर बसाने और अिस तरह अुन्हें सन्तुष्ट करनेमें है। अिस दिशामें सभी पार्टियों और सभी गिरोहोंको अपने-अपने फ़र्ज़ अदा करने हैं। दिलकी सफाअीके लिअे यह ज़रूरी है कि सभी लोग बीती हुअी बातोंको भूल जायँ। अगर बीता हुआ भूल जानेकी आदत ठीक तरहसे डाली जाय, तो वह अेक बड़ी देन बन जाती है। वह अिन्सानको दिया हुआ भगवानका क़ीमती वरदान है। अगर आप लोगोंमें बीती हुअी बातोंको भूलनेकी शक्ति नहीं है, तो आप दान देनेके लिअे अपने जेबोंमें हाथ ही न डाल सकेंगे। आपसे मेरी दरख्वास्त है कि मेरे और शहीद साहबके चले जानेके बाद, आप लोग आपसमें सलाह करें और जब तक अेक समझदारी भरे नतीजेपर न पहुँचें, तब तक यह होटल न छोड़ें।

मुसलमानोंका अच्छा काम

अिसके बाद गांधीजी और अुनके साथी, मोटरमें बैठकर बेघमरी पार्ककी तरफ़ रवाना हुअे, जहाँ प्रार्थना-सभा होनेवाली थी। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा — चूँकि मैं अभी धनवानोंकी सभामें भाषण देकर आ रहा हूँ, अिसलिअे आपके सामने ज़्यादा नहीं बोलूँगा। मुझे आपके अेम० अेल० अे० कमलबाबूसे यह जानकर खुशी हुअी कि अब दोनों जातियोंमें पूरी दोस्ती है और शरणार्थी लोग अपने-अपने घरोंको वापस लौटनेके लिअे तैयार हैं। अेक बहुत बड़ी अड़चन यह है कि ये लोग जिन फेक्टरियोंमें काम करके अपनी रोज़ी कमाते थे, वे चालू नहीं हुअी हैं। मुसलमान पड़ोसियोंने शरणार्थियों द्वारा छोड़ी हुअी बरबाद जगहोंको खड़ा करनेका काम अपने ज़िम्मे ले लिया है। अगर यह खबर सौ फ़ी सदी सच है, तो यह बात कलकत्ताके सारे दंगा-पीड़ित हिस्सोंपर अपना अच्छा असर डालेगी। मैं आप लोगोंको सूचित करना चाहता हूँ कि मंगलवारको मेरा नोआखाली जानेका अिरादा है। अगर अुसी वक़्त शहीद साहब भी मेरे साथ चल सके, तो वे भी मेरे साथ जायेंगे। मैं नोआखालीमें ज़्यादा दिनों तक नहीं रहूँगा और कलकत्तामें जो काम अच्छे शगुनसे शुरू हुआ है, अुसे पूरा करनेके लिअे शीघ्र ही यहाँ लौटूँगा। मुझे अुम्मीद है, अिस अरसेमें निराश्रितोंको फिरसे बसानेका काम दुगुनी तेज़ीसे जारी रहेगा। अगर यहाँ टिकाअू शान्ति क़ायम करनी है, तो अिस काममें देरी नहीं लगानी चाहिये।

कलकत्ता, ६-९-'४७

डिप्टी मेयरके भाषणका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि यहाँ अुनके द्वारा 'फेअरवेल' (बिदाअी) शब्दका अुपयोग बेमौजूँ हुआ है। सोड़पुरका खादी-प्रतिष्ठान मेरा स्थायी घर है, मगर अब तो मैंने कलकत्तामें बेलियाघाटा मोहल्लेके मुसलमान दोस्तोंके बीच अपना घर बना लिया है। मैं तो श्री० हेमप्रभादेवी और अुनके साथी कार्यकर्ताओंको अपने अिस नये मकानमें मेरी देखरेखके लिअे भी आने देना नहीं चाहता। मेरे मुसलमान दोस्त जो कुछ भी सेवाके रूपमें देंगे, अुसीसे मैं सन्तुष्ट हो जाअूँगा। अिसमें मैंने कोअी ग़लती नहीं की है। मुझे दक्खिन अफ्रीकासे ही मुसलमान परिवारोंमें आरामसे रहनेकी आदत पड़ी हुअी है।

शहीद साहब

अिसके बाद गांधीजीने सचिन मित्र और स्मृतीश बेनरजीकी कुरबानियोंका जिक्र किया। अुन्होंने कहा, वे दोनों हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच शान्ति कायम करनेकी कोशिशमें मरे हैं। मुझे अुनके मरनेका कोअी दुःख नहीं है। दोनों जातियोंमें मेल-मिलाप और भाअीचारा कायम करने के लिअे अैसे बेगुनाहोंकी मौत जरूरी है। आप गलतीसे यह न समझें कि अैसे शहीद सिर्फ हिन्दुओंमें ही मिलते हैं। मैं आपको अैसी कअी मिसालें दे सकता हूँ, जिनमें मुसलमानोंने हिन्दुओंको बचाने में अपनी जानें गँवाअी हैं। मुझे भी अपने जीवनमें अिस तरहके कअी अनुभव हुअे हैं। हर देश और हर जातिमें अच्छे और बुरे लोग होते हैं। यही विचार मुझे शहीद साहबके पास लाया है, जिनके बारेमें मुझे कअी हिन्दुओंके द्वारा और बहुतसे पत्रोंमें यह बात कही गअी है कि मेरे शान्ति-मिशनमें शहीद साहबको अपना साथी बनाकर मैंने नादानी की है।

(पृष्ठ २७८ पर)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२१ सितम्बर १९४७

सावधान!

अगर सरकारें और अुनके दफ़्तर सावधानी नहीं लेंगे, तो मुमकिन है कि अंग्रेजी ज़बान हिन्दुस्तानीकी जगहको हड़प ले। अिससे हिन्दुस्तानके अुन करोड़ों लोगोंको बेहद नुक़सान होगा, जो कभी भी अंग्रेजी समझ नहीं सकेंगे। मेरे खयालमें, प्रान्तीय सरकारोंके लिअे यह बहुत आसान बात होनी चाहिये कि वे अपने यहाँ अैसे कर्मचारी रखें, जो सारा काम प्रान्तीय भाषाओं और अन्तर्प्रान्तीय भाषामें कर सकें। मेरी रायमें अन्तर्प्रान्तीय भाषा, सिर्फ़ नागरी या अुर्दू लिपिमें लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी ही हो सकती है।

यह ज़रूरी फेरफार करनेमें अेक दिन खोना भी देशको भारी सांस्कृतिक या तहज़ीबी नुक़सान पहुँचाना है। सबसे पहली और ज़रूरी चीज़ यह है कि हम अपनी अुन प्रान्तीय भाषाओंका संशोधन करें, जो हिन्दुस्तानको वरदानकी तरह मिली हुअी हैं। यह कहना दिमाग़ी आलसके सिवा और कुछ नहीं है कि हमारी अदालतों, हमारी स्कूलों और यहाँ तक कि हमारे दफ़्तरोंमें भी यह भाषा-सम्बन्धी फेरफार करनेके लिअे कुछ वक़्त, शायद कुछ बरस चाहियें। हाँ, जब तक प्रान्तोंका भाषाके आधारपर फिरसे बँटवारा नहीं होता, तब तक बम्बअी और मद्रास जैसे प्रान्तोंमें, जहाँ बहुत-सी भाषाअें बोली जाती हैं, थोड़ी मुश्किल ज़रूर होगी। प्रान्तीय सरकारें अैसा कोअी तरीक़ा खोज सकती हैं, जिससे अुन प्रान्तोंके लोग वहाँ अपनापन अनुभव कर सकें। जब तक हिन्दुस्तानी-संघ अिस सवालको हल न कर ले कि अन्तर्प्रान्तीय ज़बान नागरी या अुर्दू लिपिमें लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी हो, या सिर्फ़ नागरी लिपिमें लिखी जानेवाली हिन्दी, तब तकके लिअे प्रान्तीय सरकारें ठहरी न रहें। अिसकी वजहसे अुन्हें ज़रूरी सुधार करनेमें देर न लगानी चाहिये। भाषाके बारेमें यह अेक बिलकुल ग़ैर-ज़रूरी विवाद खड़ा हो गया है, जिसकी वजहसे हिन्दुस्तानमें अंग्रेजी-भाषा घुस सकती है। और अगर अैसा हुआ, तो अिस देशके लिअे यह अेक अैसे कलंककी बात होगी, जिसे धोना हमेशाके लिअे असंभव होगा। अगर सारे सरकारी दफ़्तरोंमें प्रान्तीय भाषाके अिस्तेमाल करनेका क़दम अिसी वक़्त अुठाया जाय, तो अन्तर्प्रान्तीय ज़बानका अुपयोग तो अुसके बाद तुरन्त ही होने लगेगा। प्रान्तोंको केन्द्रसे सम्बन्ध रखना ही पड़ेगा। और अगर केन्द्रीय सरकारने शीघ्र ही यह महसूस करनेकी समझदारी की कि अुन मुट्ठीभर हिन्दुस्तानियोंके लिअे, हिन्दुस्तानकी संस्कृतिको नुक़सान नहीं पहुँचाना चाहिये, जो अितने आलसी हैं कि जिस ज़बानको, किसी भी पार्टीका दिल दुखाये बग़ैर सारे हिन्दुस्तानमें आसानीसे अपनाया जा सकता है, अुसे भी नहीं सीख सकते, तो अैसी हालतमें प्रान्तीय सरकारें केन्द्रीय सरकारसे अंग्रेजीमें अपना व्यवहार रखनेका साहस नहीं कर सकेंगी। मेरा मतलब यह है कि जिस तरह हमारी आज़ादीको जबरदस्ती छीननेवाले अंग्रेजोंकी सियासी हुकूमतको हमने सफलतापूर्वक अिस देशसे निकाल दिया, अुसी तरह हमारी संस्कृतिको दबानेवाली अंग्रेजी ज़बानको भी हमें यहाँसे निकाल बाहर करना चाहिये। हाँ, व्यापार और राजनीतिकी अन्तरराष्ट्रीय भाषाके नाते अंग्रेजीका अपना स्वाभाविक स्थान हमेशा क़ायम रहेगा।

नअी दिल्ली, ११-९-'४७

(अंग्रेजीसे) **मोहनदास करमचंद गांधी**

बिहार बिहारियोंके लिअे और हिन्दुस्तान

बिहार, सचमुच बिहारियोंके लिअे है, लेकिन वह हिन्दुस्तानके लिअे भी है। जो बात बिहारके बारेमें सच है, वही यूनियनके दूसरे सब सूबोंके बारेमें भी सच है। किसी भी हिन्दुस्तानीके साथ बिहारमें परदेशीकी तरह बरताव नहीं किया जा सकता, जैसा कि शायद अुसके साथ आजके पाकिस्तानमें या अेक पाकिस्तानीके साथ हिन्दुस्तानमें किया जा सकता है। अगर हम मुसीबतों और आपसी जलनसे बचना चाहते हैं, तो हमें अिस फर्क़का ध्यान रखना चाहिये।

अिसलिअे, हालाँ कि यूनियनके हर हिन्दुस्तानीको बिहारमें बसनेका हक है, फिर भी अुसे बिहारियोंको अुखाड़ने या अुनके हक छीननेके लिअे अैसा नहीं करना चाहिये। अगर अिस शर्तपर अच्छी तरह अमल नहीं किया गया, तो संभव है कि बिहारमें ग़ैर-बिहारी हिन्दुस्तानियोंकी अैसी बाढ़ आ जाय कि बिहारियोंको बड़ी तादादमें अपने सूबेसे बाहर निकलना पड़े। अिस तरह हम अिस नतीजेपर पहुँचनेके लिअे मजबूर हो जाते हैं कि जो ग़ैर-बिहारी हिन्दुस्तानी, बिहारमें जाकर बसता है, अुसे बिहारकी सेवाके लिअे ही अैसा करना चाहिये, न कि हमारे पुराने मालिकोंकी तरह अुसे चूसने और लूटनेके लिअे।

अिस विषयकी अिस तरह जाँच करनेसे हमारे सामने जमींदारों और रैयतका सवाल खड़ा होता है। जब कोअी ग़ैर-बिहारी पैसा पैदा करनेके लिअे बिहारमें जाकर बसता है, तो बहुत संभव है कि वह जमींदारसे मिलकर रैयतको चूसनेके लिअे अैसा करे। लेकिन जमींदार सचमुच रैयतके लिअे अपनी जमींदारीके ट्रस्टी बन जायँ, तो अैसा अपवित्र गुट्ट कभी बन ही नहीं सकता। बिहारमें जमींदारीका कठिन सवाल अभी हल किया जानेको है। हम तो यह पसन्द करेंगे कि बिहारके छोटे और बड़े जमींदारों, अुनकी रैयत और सरकारके बीच कोअी अैसा अुचित, ग़ैर-तरफ़दार और सन्तोषके लायक समझौता हो, जिससे क़ानून पास हो जानेपर अैसा मौक़ा न आये कि कोअी अुसपर अमल न करे, या जमींदारों या रैयतके साथ जबरदस्ती करनेकी जरूरत पड़े। काश, सारे हिन्दुस्तानमें बिना खून बहाये और बिना जबरदस्ती किये ये सारे फेरफार — जिनमेंसे कुछ क्रान्तिकारी भी होने चाहियें — हो जायँ! यह तो हुआ हिन्दुस्तानके दूसरे सूबोंसे आकर बिहारमें बसनेवालोंके लिअे।

वहाँकी नौकरियोंका क्या हो? अैसा लगता है कि अगर यूनियनके सारे सूबोंको हर दिशामें अेक-सी तरक़्क़ी करनी हो, तो हर सूबेकी नौकरियाँ, पूरे हिन्दुस्तानकी तरक़्क़ीके खयालसे, ज्यादातर वहाँके रहनेवालोंको ही दी जानी चाहियें। अगर हिन्दुस्तानको दुनियाके सामने स्वाभिमानसे सिर अूँचा रखना है, तो किसी सूबे और किसी जाति या तबक़ेको पिछड़ा हुआ नहीं रखा जा सकता। लेकिन अपने अुन हथियारोंके बलपर हिन्दुस्तान अैसा नहीं कर सकता, जिनसे दुनिया अूब अुठी है। अुसे अपने हर नागरिकके जीवनमें और हालमें ही मेरे द्वारा 'हरिजन'में बताये गये समाजवादमें प्रकट होनेवाली अपनी क़ुदरती तहजीब या संस्कृतिके द्वारा ही चमकना चाहिये। अिसका यह मतलब है कि अपनी योजनाओं या अुसूलोंको जन-प्रिय बनानेके लिअे किसी भी तरहकी ताक़त या दबावको काममें न लिया जाय। जो चीज़ सचमुच जन-प्रिय है, अुसे सबसे मनवानेके लिअे जनताकी रायके सिवा दूसरी किसी ताक़तकी शायद ही जरूरत हो। अिसलिअे बिहार, अुड़ीसा और आसाममें कुछ लोगों द्वारा की जानेवाली हिंसाके जो बुरे दृश्य देखे गये, वे कभी नहीं दिखाअी देने चाहिये थे। अगर कोअी आदमी नियमके खिलाफ काम करता है या दूसरे सूबोंके लोग किसी सूबेमें आकर वहाँके लोगोंके हक मारते हैं, तो अुन्हें सजा देने और व्यवस्था कायम रखनेके लिअे जन-प्रिय सरकारें सूबोंमें राज कर रही हैं। सूबोंकी सरकारोंका यह फर्ज़ है कि वे दूसरे सूबोंसे अपने यहाँ आनेवाले सब लोगोंकी

www.vinoba.in

पूरी-पूरी हिफाजत करें। "जिस चीज़को तुम अपनी समझते हो, अुसका अैसा अिस्तेमाल करो कि दूसरेको नुक़सान न पहुँचे" यह समानताका जाना-पहचाना अुसूल है। यह नैतिक बरतावका भी सुन्दर नियम है। आजकी हालतमें यह कितना अुचित मालूम होता है!

यहाँ तक मैंने सूबेमें आनेवाले नये लोगोंके बारेमें कहा। लेकिन अुन लोगोंका क्या, जिनमेंसे कुछ बिहारमें १५ अगस्तके दिन सरकारी नौकरियोंमें और कुछ खानगी नौकरियोंमें थे? जहाँ तक मेरा विचार है, अैसे लोग जब तक दूसरा चुनाव नहीं करते, तब तक अुनके साथ बिहारियोंकी तरह ही बरताव किया जाना चाहिये। कुदरती तौरपर अुन्हें परदेशियोंकी तरह अलग बस्ती नहीं बनानी चाहिये। "रोममें रोमनोंकी तरह रहो" यह कहावत जहाँ तक रोमन बुराअियोंसे दूर रहती है, वहाँ तक समझदारीसे भरी और फायदा पहुँचानेवाली कहावत है। अेक दूसरेके साथ घुल-मिलकर तरक़्क़ी करनेके काममें यह ध्यान रखना चाहिये कि बुराअियोंको छोड़ दिया जाय और अच्छाअियोंको पचा लिया जाय। बंगालमें अेक गुजरातीके नाते मुझे बंगालकी सारी अच्छाअियोंको तुरत पचा लेना चाहिये और अुसकी बुराअीको कभी छूना भी नहीं चाहिये। मुझे हमेशा बंगालकी सेवा करनी चाहिये; अुसे अपने फायदेके लिअे चूसना नहीं चाहिये। दूसरोंसे बिलकुल अलग रहनेवाली हमारी प्रान्तीयता जिन्दगीको बरबाद करनेवाली चीज़ है। मेरी कल्पनाके सूबेकी हद सारे हिन्दुस्तानकी हदोंतक फैली हुअी होगी, ताकि अन्तमें अुसकी हद सारे विश्वकी हदों तक फैल जाय। वर्ना वह खतम हो जायगा।

दिल्ली जाते हुअे रेलमें, ८-९-'४७
(अंग्रेजीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

नशीली चीज़ोंकी मनाअी

अिस सुधारके लिअे आज सबसे अच्छा मौका है। आज देशमें पंचायतका राज है। हिन्दुस्तानके दोनों हिस्सोंके साथ साथ देशी राज भी अिस सुधारके लिअे तैयार हैं। दोनों हिस्सोंमें भुखमरी फैली हुअी है। न खानेको अनाज मिलता, न पहननेको कपड़ा। जब लोग भुखमरी और नंगेपनके किनारे खड़े हों, तब शराब, अफीम वग़ैराके बारेमें सोचा भी नहीं जा सकता। शराब और अफीम पीनेवाले लोग पैसा तो बरबाद करते ही हैं, साथ ही अपने आपपर काबू भी खो देते हैं। नशेके असरमें आदमी न करने लायक काम भी कर बैठता है। अिसलिअे हर तरहसे विचारते हुअे नशीली चीज़ोंका खाना और पीना बन्द होना ही चाहिये।

हम सिर्फ़ कानून पास करके ही अिस बुराअीको खतम नहीं कर सकते। नशा करनेवाले चाहे जहाँसे नशीली चीज़ें लाकर खायें-पियेंगे। अिनके बनानेवाले और बेचनेवाले काला बाजार बन्द करनेके लिअे अेकदम तैयार नहीं होंगे।

अिसलिअे नीचेकी तमाम बातें अेक साथ की जानी चाहियें:

(१) जरूरी कायदा बनाया जाय,

(२) लोगोंको नशेकी बुराअी समझाअी जाय,

(३) शराबकी दुकानोंपर ही सरकारको पीनेकी निर्दोष चीजोंकी दुकानें कायम करनी चाहियें, और वहाँ किताबों, अखबारों और खेलोंके रूपमें मनबहलावके निर्दोष साधन रखने चाहियें।

(४) शराब, अफीम वग़ैरा बेचनेसे जो आमदनी हो, वह सब लोगोंको नशीली चीजें न वापरनेकी बात समझानेमें खर्चकी जानी चाहिये।

(५) नशीली चीजोंकी बिक्रीसे होनेवाली आमदनीको राष्ट्रके बच्चोंकी शिक्षामें या जनताको फायदा पहुँचानेवाले दूसरे कामोंमें खर्च करना बड़ा पाप है। सरकारको अैसी आमदनी राष्ट्र-निर्माणके कामोंमें खर्च करनेका लालच छोड़ना ही चाहिये। अनुभव यह बताता है कि नशीली चीज़ोंका खान पान छोड़नेवालेको जो फायदा होता है, अुसे सारी प्रजाका फायदा समझना चाहिये। अगर हम अिस बुराअीको जड़से खतम करदें, तो हमें राष्ट्रकी आमदनी बढ़ानेके दूसरे बहुतसे रास्ते और साधन आसानीसे मिल जायँगे।

दिल्ली जाते हुअे रेलमें, ८-९-'४७
(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

गांधीजीके अख़बारी बयान

१

मेरे मन कुछ और है, कर्त्ताके कुछ और

'मेरे मन कुछ और है, कर्त्ताके कुछ और' वाली कहावत मेरे जीवनमें कअी बार सच साबित हुअी है, जैसी कि वह दूसरे बहुतसे लोगोंके जीवनमें भी हुअी होगी। जब मैंने पिछले अितवारको कलकत्ता छोड़ा, तो मैं दिल्लीकी अशान्त हालतके बारेमें कुछ भी नहीं जानता था। दिल्ली आनेके बाद मैं सारे दिन यहाँकी मौजूदा दर्दभरी कहानी सुनता रहा हूँ। मैं कअी मुसलमान दोस्तोंसे मिला, जिन्होंने अपनी करुण कहानी सुनाअी। जितना कुछ मैंने सुना, वह मुझे यह चेतावनी देनेके लिअे काफ़ी है कि जब तक दिल्लीकी हालत पहले जैसी शान्त न हो जाय, तब तक अुसे छोड़कर मुझे पंजाब नहीं जाना चाहिये।

अिस गरम वातावरणको शान्त करनेके लिअे मुझे अपनी कुछ कोशिश करनी ही चाहिये। हिन्दुस्तानकी अिस राजधानीके लिअे मुझे 'करो या मरो' वाला अपना पुराना सूत्र काममें लेना ही चाहिये। मुझे यह कहते हुअे खुशी होती है कि दिल्लीमें रहनेवाले लोग अिस निरर्थक बरबादीको पसन्द नहीं करते। मैं अुन शरणार्थियोंके गुस्सेको समझता हूँ, जिन्हें दुर्भाग्यने पच्छिमी पंजाबसे खदेड़ दिया है। मगर गुस्सा पागलपनका छोटा भाअी है। वह सिर्फ़ परिस्थितिको हर तरहसे बिगाड़ता ही है। अिस मर्ज़का अिलाज बदला लेना नहीं है। अुससे असली बीमारी और ज़्यादा बिगड़ती है। अिसलिअे जो लोग खून करने, आग लगाने और लूट-मार करनेके नासमझी-भरे काममें लगे हुअे हैं, अुनसे मेरी बिनती है कि वे अपना हाथ रोकें।

मरकज़ी सरकारमें, हिन्दुस्तानी-संघके सबसे क़ाबिल, हिम्मतवर और ज़्याद-से-ज़्यादा आत्म-बलिदानकी भावनावाले लोग अिस वक़्त काम कर रहे हैं। आज़ादीका अैलान होनेके बाद, अुन्हें अपना काम सँभाले अभी महीना भर भी नहीं हुआ है। बिगड़े हुअे कारबारको व्यवस्थित करनेका अुन्हें मौक़ा न देना गुनाह और खुदकुशी करना है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि देशमें अनाजकी कमी है। दंगोंकी वजहसे दिल्लीका सारा अिन्तजाम बिगड़ गया है, जिससे अनाज बाँटनेका काम असम्भव हो गया है। भगवान पागल बनी हुअी दिल्लीमें फिरसे शान्ति कायम करे!

मैं अिस अुम्मीदके साथ अपनी बात खतम करता हूँ कि मेरे बिदा होते वक़्त कलकत्ताने जो वचन दिया था, अुसे वह पूरा करेगा। मेरे आसपास फैले हुअे अिस पागलपनके बीच अुसका दिया हुआ वचन ही मुझे सहारा दिये हुअे है।

नअी दिल्ली, ९-९-'४७

२

शरणार्थी-कैम्पमें सफ़ाअी

आज राजकुमारी अमृतकौर और डॉ० सुशीला नय्यर मुझे अिरविन अस्पतालमें ले गअी थीं। वहाँपर जात वग़ैराका कोअी भेदभाव रखे बग़ैर सिर्फ़ जख़्मी लोगोंका ही अिलाज किया जाता है। मरीज़ोंमें अेक बच्चा था, जिसकी अुमर मुश्किलसे पाँच बरसकी होगी। गोली लगनेसे अुसके बदनपर घाव हो गया था। डॉक्टर और नर्सोंपर कामका भारी बोझ था। वहाँ मुसलमान मरीज़ोंकी तादाद ज़्यादा थी, क्योंकि हिन्दू और सिक्ख मरीज़ोंको दूसरी अस्पतालोंमें भेज दिया गया था।

राजकुमारीसे मुझे पता चला कि शरणार्थी-कैम्पोंमें पाखाने साफ़ करनेके लिअे भंगी भेजना क़रीब-क़रीब नामुमकिन है। अिससे

www.vinoba.in

हैजे-जैसी छूतकी बीमारीके फैलनेका डर है। मेरी रायमें शरणार्थियोंको अपने-अपने कैम्पोंमें खुद सफाओ करनी चाहिये। पाखाने भी अुन्हें ही साफ करने चाहियें और कैम्प सुपरिण्टेण्डेण्टकी स्वीकृतिसे कुछ अुपयोगी काम करना चाहिये। सिर्फ अुन लोगोंको छोड़कर जो शारीरिक मेहनत नहीं कर सकते, बाकी सबपर यह नियम लागू होता है। सारे शरणार्थी कैम्प, सफ़ाओ, सादगी और मेहनतके नमूने होने चाहियें।

आज पाकिस्तानके हाअि-कमिश्नर मुझसे मिलने आये थे। अुनका फ़िरक़ेवाराना शान्ति और दोस्तीमें पक्का विश्वास है। सिक्ख भाओ आज मुझसे दो बार मिले। भारत-सरकारके किरपान-सम्बन्धी हुक्मसे वे दुःखी थे। मैं अिसके बारेमें सरकारसे चर्चा करूँ, अुससे पहले अुन्होंने किरपानकी अपनी ज़रूरतके बारेमें मुझे लिखकर देनेका वचन दिया है। अुन्होंने आगे कहा कि अुनके खिलाफ़ लगाये गये अिलज़ामोंको बहुत नमक-मिर्च मिलाकर कहा गया है। हिन्दुस्तानी संघमें रहनेवाले मुसलमानोंसे या किसी दूसरी जातसे हमारा कोअी झगड़ा नहीं हो सकता। हम तो देशमें कानूनको माननेवाले नागरिक बनकर ही रहना चाहते हैं।

नअी दिल्ली, ११-९-'४७

(अंग्रेजीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

(पृष्ठ २७५से आगे)

मैं कहूँगा कि अैसा करके मैंने नादानी नहीं की है। मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। शहीद साहबने भूतकालमें क्या किया, अिससे मुझे कोओी मतलब नहीं। लेकिन मैं अिस बातका प्रमाण देता हूँ कि जबसे हम दोनों साथ रहकर काम करने लगे हैं, तबसे आज तक शहीद साहबने मुझे पूरा पूरा सहयोग दिया है। मैं यह कबूल करता हूँ कि बिना शहीद साहबकी कीमती मददके मैं आप लोगोंके बीच काम नहीं कर सकता था। शहीद साहबने अपने आपको शान्ति-मिशन के जिस काममें पूरे दिलसे लगा दिया है, अुसके पीछे किसी बुरी नीयतका शक करना बुद्धिका अपमान करना है। अुनका आलीशान बंगला है। अेक भाओ हैं जिन्हें वे बुद्धिमें अपनेसे अूँचा मानते हैं। अुनके अेक दूसरे भाओ हैं, जिनसे लन्दनकी गोलमेज-परिषद्में मेरी मुलाकात हुओ थी और जो ढाका युनिवर्सिटीके वाअिसचान्सलर रह चुके हैं। शहीद साहबके चाचा सर अब्दुल्ला, पैगम्बर साहबके वचनों के लेखक थे। शहीद साहब जिस मकसदसे मेरे काममें शामिल हुअे हैं, अुसमें विश्वास न करके आप भारी गलती करेंगे। न तो आपको और न दूसरोंको किसी आदमीकी नीयतपर शक करनेका कोओी हक है। शहीद साहबके भले कामोंको देखकर भी अुनकी नीयतपर शक करना मुझे पसन्द नहीं। आप यह जानते हैं कि मेरे विरोध करनेपर भी मुसलमानोंने मुझे अिस्लामका पहले नम्बरका दुश्मन करार दिया है। अिसलिअे क्या आप लोग यह चाहेंगे कि मुसलमान मेरे सही कामोंकी कमी कदर न करें?

अन्तमें, आपको अैसे अविश्वासके भयंकर नतीजेके बारेमें भी सोचना चाहिये। संभव है, आपका यह अविश्वास कलकत्ताके आजके मेल-मिलाप और भाओचारेको खतम करदे और अिस तरह पंजाबको भाओ-भाओके बीचकी लड़ाओसे बचानेके अेक-मात्र मौकेको हाथसे छीन ले।

अिसके बाद गांधीजीने शान्ति-सेना और दूसरे संघोंका जिक्र किया, जो कलकत्तामें शान्ति बनाये रखनेकी भरसक कोशिश कर रहे हैं। अुन्होंने कहा, औरतें भी अिस काममें हाथ बँटानेके लिअे आगे आओ हैं। दोनों जातियोंमें अेका और भाओचारा बनाये रखनेकी कोशिशमें विद्यार्थी सबसे आगे बढ़ गये हैं। कुछ नौजवान मुझे बिना लायसेन्सके हथियार सौंप गये हैं, जिनमें स्टेनगन, हाथसे फेंके जानेवाले बम, और दूसरे मामूली बरबादी करनेवाले हथियार भी हैं। मैंने अुनकी अिस हिम्मतके लिअे अुन्हें धन्यवाद दिया। मुझे आशा है कि जिन-जिन हिन्दुओं और मुसलमानोंके पास बिना लायसेन्सके हथियार हैं, वे सब मुझे अिसी तरह सौंप जायँगे। यह दोनों जातियोंके आपसी भरोसेका सबूत होगा। मुझे प्रधान-मंत्रीने यह विश्वास दिलाया है कि जो लोग दी हुओ तारीखके भीतर (यह जितनी पास हो अुतना अच्छा) अैसे हथियार लौटा देंगे, अुन्हें शान्तिके काममें खुली मदद देनेके लिअे धन्यवाद दिया जायगा और अिस समय या बादमें कोओी सज़ा नहीं दी जायगी — हालाँकि बिना लायसेन्सके हथियार रखना दरअसल गुनाह है। अिसलिअे मैं अैसे हथियार रखनेवाले सब लोगोंसे यह बिनती करता हूँ कि वे अपने हथियार सरकारको सौंप दें, या सरकार तक पहुँचानेके लिअे अपने दोस्तोंको सौंप दें।

मैं कार्पोरेशनके अुन कार्यकर्ताओंको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने डिप्युटी मेयरके कहे मुताबिक अिस सभाका पूरा बन्दोबस्त करनेके लिअे रातभर काम किया, जिसमें बारिश होते हुअे भी अितनी बड़ी तादादमें लोग अिकट्ठा हुअे हैं।

अन्तमें गांधीजीने कहा, कलकत्ताकी और बाहरकी सारी जातियोंके दोस्तोंके दबावसे अेक ही दिनकी शान्तिके बाद अपना अुपवास तोड़कर मैंने कलकत्तामें शान्ति बनाये रखनेका बोझ अुनपर डाल दिया है। वे जान देकर भी अपना वचन पूरा करेंगे। भगवान करे वे लोग अनजानमें ही अेकाअेक मेरा अुपवास तुड़वाकर मेरी हत्याके दोषी न बनें। मेरे साथ वे भी कुछ दिन और ठहर सकते थे, ताकि मैं खुद हालतका अंदाजा लगा सकता। लेकिन हिन्दू-महासभाके प्रेसिडेण्ट श्री अेन० सी० चटरजी, शहीद साहब और दूसरे बहुतसे दोस्तोंके आग्रहके सामने मैं भलीभाँति अैसा कर न सका। लेकिन अुपवास तोड़कर मैंने कलकत्ताके सारे नागरिकों और यहाँ थोड़े समय तक रहनेवालोंके कंधोंपर शान्ति कायम रखनेका और भी बड़ा बोझ डाल दिया है। आपको अपनी ही कोशिशोंसे कायमकी हुओ शान्ति चाहिये, न कि सरकारी फौजोंकी लादी हुओ। अगर बदकिस्मतीसे कलकत्ताकी शान्ति फिर टूटी, तो मेरे लिअे आमरण अुपवास करनेके सिवा दूसरा कोओी चारा न रह जायगा। मैं आपके साथ बच्चेकी तरह खेल करके हर समय यह नहीं कह सकता कि अगर आप फिर समझदार बन जायँगे, तो मैं अुपवास तोड़ दूँगा। यही पवित्र घोषणा मैंने पहले बिहारके लिअे और बादमें नोआखालीके लिअे की थी, और अब कलकत्ताके लिअे कर रहा हूँ। मेरी जिन्दगी जैसी बन गओ है, अुसमें मेरे लिअे दूसरा कोओी रास्ता ही नहीं है। अगर भगवान चाहता है कि मुझे अभी भी देशकी कुछ सेवा करनी चाहिये, तो वह अिस मामलेमें सबको सही काम करनेकी समझ देगा। कलकत्ताके समझदार बने रहने के नतीजेपर तो जरा सोचिये। अुससे पूरबी और पच्छिमी बंगालमें अपने आप शान्ति और समझदारी बनी रहेगी। अुससे बिहार समझदार बना रहेगा। और बिहारकी समझदारीसे पंजाब भी अपना पागलपन छोड़ देगा — जहाँ मैं जा रहा हूँ। अगर पंजाब समझदार बन जाता है, तो सारा हिन्दुस्तान जरूर समझदार बन जायगा। भगवान अिस काममें हम सबकी मदद करे!

नअी दिल्ली, १०-९-'४७

मुर्दोंका शहर

आजकी सभामें कर्फ्यूके कारण कम लोग आये थे, फिर भी गांधीजी सारी दिल्लीके लिअे बोले थे। अुन्होंने कहा, जब मैं शहादरा पहुँचा, तो मैंने अपने स्वागतके लिअे आये हुअे सरदार पटेल, राजकुमारी और दूसरे लोगोंको देखा। लेकिन मुझे सरदारके ओठोंपर हमेशाकी मुस्कराहट नहीं दिखाओ दी। अुनका मर्दखरापन भी गायब था। रेलसे अुतरकर मैं जिन पुलिसवालों और जनतासे मिला, अुनके चेहरोंपर भी सरदार पटेलकी अुदासी दिखाओ दे रही थी। क्या हमेशा खुश दिखाओ देने वाली दिल्ली आज अेकदम मुर्दोंका

www.vinoba.in

शहर बन गअी है ? दूसरा अचरज भी मुझे देखना बदा था। जिस भंगी-बस्तीमें ठहरनेमें मुझे आनन्द होता था, वहाँ न ले जा कर मुझे बिड़लाओंके आलीशान महलमें ले जाया गया। अिसका कारण जानकर मुझे दुःख हुआ। फिर भी अुस घरमें पहुँच कर मुझे खुशी हुअी, जहाँ मैं पहले अक्सर ठहरा करता था। मैं भंगी-बस्तीके वाल्मीकि भाअियोंके बीच ठहरूँ या बिड़ला-भवनमें ठहरूँ, दोनों जगह मैं बिड़ला भाअियोंका ही मेहमान बनता हूँ। अुनके आदमी भंगी-बस्तीमें भी पूरी लगनके साथ मेरी देखभाल करते हैं। अिस फेरबदलके कारण सरदार नहीं हैं। वह वाल्मीकि-बस्तीमें मेरी हिफाजतके बारेमें किसी तरह डरनेकी कमजोरी कभी नहीं दिखा सकते। भंगियोंके बीच रहकर मुझे बड़ी खुशी होती है, हालाँकि नअी दिल्लीकी कमेटीके कसूरसे मैं बिलकुल अुन घरोंमें तो नहीं रह सकता, जिनमें भंगी लोग मछलियोंकी तरह अेक साथ ठूँस दिये जाते हैं।

निराश्रितोंका सवाल

मुझे बिड़ला-भवनमें ठहरानेका कारण यह है कि भंगी-बस्तीमें जहाँ मैं ठहरा करता था, वहाँ अिस समय निराश्रित लोग ठहराये गये हैं। अुनकी जरूरत मुझसे कअी गुना बड़ी है। लेकिन हमारे यहाँ निराश्रितोंका कोअी भी सवाल खड़ा हो, यह क्या अेक राष्ट्रके नाते हमारे लिअे शरमकी बात नहीं है ? पण्डित नेहरू और सरदार पटेलके साथ कायदे आज़म जिन्ना, लियाकतअली साहब और दूसरे पाकिस्तानी नेताओंने यह अैलान किया था कि हिन्दुस्तानी संघ और पाकिस्तानमें अल्पमतवालोंके साथ वैसा ही बरताव किया जायगा, जैसा कि बहुमतवालोंके साथ। क्या हर डोमिनियनके हाकिमोंने यह मीठी बात दुनियाको खुश करनेके लिअे ही कही थी, या अिसका मतलब दुनियाको यह दिखाना था कि हमारी कथनी और करनीमें कोअी फर्क नहीं है, और हम अपना वचन पूरा करनेके लिअे जान भी दे देंगे ? अगर अैसा ही है, तो मैं पूछता हूँ कि हिन्दुओं, सिक्खों, गौरवभरे आमिलों और भाअीबन्दोंको अपना घर पाकिस्तान छोड़नेके लिअे क्यों मजबूर किया गया ? क्वेटा, नवाबशाह, और कराचीमें क्या हुआ है ? पच्छिमी पंजाबकी दर्दभरी कहानियाँ, सुनने और पढ़नेवालोंके दिलोंको तोड़ देती हैं। पाकिस्तान या हिन्दुस्तानी संघके हाकिमोंके लाचारी दिखाकर यह कहनेसे काम नहीं चलेगा कि यह सब गुण्डोंका काम है। अपने यहाँ रहनेवाले लोगोंके कामोंकी पूरी जिम्मेदारी अपने सिर लेना हर डोमिनियनका फर्ज़ है। "अुनका काम क्या और क्यों करनेका नहीं, बल्कि करने और मरनेका है।" अब वे साम्राजवादके कुचल डालनेवाले बोझके नीचे चाहे या अनचाहे कोअी काम करनेके लिअे मजबूर नहीं किये जाते। आज वे आज़ादीसे जो चाहे, कर सकते हैं। लेकिन अगर अुन्हें अीमानदारीसे दुनियाके सामने अपना मुँह दिखाना है, तो अिसका मतलब यह नहीं हो सकता कि अब दोनों डोमिनियनोंमें कोअी कानून-कायदा रहेगा ही नहीं। क्या यूनियनके मंत्री अपना दिवालियापन जाहिर करके दुनियाके सामने बेशर्मीसे यह मंजूर कर लेंगे कि दिल्लीके लोग या निराश्रित खुशीसे और खुद होकर क़ानूनको नहीं पालना चाहते ? मैं तो मंत्रियोंसे यह आशा करूँगा कि वे लोगोंके पागलपनके सामने झुकनेके बजाय अुनके पागलपनको दूर करनेकी कोशिशमें अपने प्राणोंकी बाजी लगा देंगे।

सारे भाषणमें गांधीजीकी आवाज बहुत धीमी थी, फिर भी वे मुर्दोंके शहरकी तरह दिखाअी देनेवाली दिल्लीके अपने दौरेका बयान करते रहे। बयानके बीच अुन्होंने अेक जगह कहा, जिस मकानमें मैं रहता हूँ, अुसमें भी फल या शाक-भाजी नहीं मिलती। क्या यह शर्मकी बात नहीं है कि कुछ मुसलमानोंके मशीनगन या बन्दूक वगैरासे गोलीबार करनेके कारण सब्जीमण्डीमें शाक-भाजीका मिलना बन्द हो गया ? शहरके अपने दौरेमें मैंने यह शिकायत सुनी कि निराश्रितोंको रेशन नहीं मिलता। जो कुछ दिया भी जाता है, वह खाने लायक नहीं होता। अिसमें अगर दोष सरकारका है, तो अुतना ही दोष निराश्रितोंका भी है जिन्होंने जरूरी कामकाजको भी रोक दिया है। अुन्होंने यह क्यों नहीं समझा कि अैसा करके वे अपने आपको नुक़सान पहुँचा रहे हैं ? अगर अुन्होंने अपनी तमाम सच्ची शिकायतोंको दूर करनेके लिअे सरकारपर भरोसा किया होता और कायदा पालनेवाले नागरिकोंकी तरह बरताव किया होता, तो मैं जानता हूँ, और अुन्हें भी जानना चाहिये, कि अुनकी ज़्यादातर मुसीबतें दूर हो जातीं।

मैं हुमायूँके मकबरेके पास मेओंकी छावनीमें गया था। अुन्होंने मुझसे कहा कि हमें अलवर और भरतपुर रियासतोंसे निकाल दिया गया है। मुसलमान दोस्तोंने जो कुछ भेजा है, अुसके सिवा हमारे पास खानेकी कोअी चीज़ नहीं है। मैं जानता हूँ कि मेओ लोग बड़ी जल्दी अुभाड़े जा सकते और गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। लेकिन अुसका यह अिलाज नहीं है कि अुन्हें न चाहनेपर भी यहाँसे निकालकर पाकिस्तान भेज दिया जाय। अुसका सच्चा अिलाज तो यह है कि अुनके साथ अिन्सानोंका-सा बरताव किया जाय और अुनकी कमजोरियोंका किसी दूसरी बीमारीकी तरह अिलाज किया जाय।

अिसके बाद मैं जामिया मिलिया गया, जिसके बनानेमें मेरा बड़ा हाथ रहा है। डॉ० जाकिर हुसेन मेरे प्यारे दोस्त हैं। अुन्होंने सचमुच दुःखके साथ मुझे अपने अनुभव सुनाये; लेकिन अुनके मनमें किसी तरहकी कड़वाहट नहीं थी। कुछ समय पहले अुन्हें जालंधर जाना पड़ा था। अगर अेक सिक्ख केप्टन और रेलवेके अेक हिन्दू कर्मचारीने समयपर वहाँ अुनकी मदद न की होती, तो मुसलमान होनेके कसूरमें गुस्सेसे पागल बने सिक्खोंने अुन्हें जानसे मार दिया होता। डॉ० जाकिर हुसेनने अिन दोनोंका अहसान मानते हुअे अपना यह अनुभव मुझे सुनाया। जरा खयाल तो कीजिये कि अिस राष्ट्रीय संस्थाको, जहाँ कअी हिन्दुओंने शिक्षा पाअी है, यह डर है कि कहीं गुस्सेसे भरे निराश्रित और अुन्हें अुकसानेवाले लोग अुसपर हमला न करदें। मैं जामिया मिलियाके अहातेमें किसी तरह ठहराये गये १०० से ज़्यादा निराश्रितोंसे मिला। जब मैंने अुनकी मुसीबतोंकी दर्दभरी कहानी सुनी, तो मेरा सिर शर्मसे नीचा हो गया। अिसके बाद मैं दीवान हॉल, वेवेल कैंटीन और किंग्सवेकी निराश्रितोंकी छावनियोंमें गया। वहाँ मैं सिक्ख और हिन्दू निराश्रितोंसे मिला। वे पंजाबकी मेरी पिछली सेवाओंको अब तक भूले नहीं थे। लेकिन अिन सारी छावनियोंमें कुछ गुस्से भरे चेहरे भी दिखाअी दिये, जिन्हें माफ किया जा सकता है। अुन्होंने मुझे हिन्दुओंकी तरफ़ कठोरता दिखानेके लिअे कोसते हुअे कहा, 'हम लोगोंकी तरह आपने मुसीबतें नहीं सही हैं। हमारी तरह आपके भाअी-बेटे और सगे-सम्बन्धी नहीं मारे गये हैं। हमारे जैसे आप दर दरके भिखारी नहीं बनाये गये हैं। आप यह कहकर हमें कैसे धीरज बँधा सकते हैं कि आप दिल्लीमें अिसीलिअे ठहरे हैं कि हिन्दुस्तानकी राजधानीमें शान्ति और अमन क़ायम करनेमें भरसक मदद कर सकें ?' यह सच है कि मैं मरे हुअे लोगोंको वापिस नहीं ला सकता। लेकिन मौत सारे प्राणियों — अिन्सान, जानवरों वगैरा — को भगवानकी दी हुअी देन है। फर्क सिर्फ़ समय और तरीकेका है। अिसलिअे सही बरताव ही जीवनका सही रास्ता है, जो अुसे जीने लायक़ और सुन्दर बनाता है।

सच्चा सिक्ख

आज दिनमें अेक सिक्ख दोस्त मुझसे मिले थे। अुन्होंने कहा कि वे जन्मसे तो सिक्ख हैं, लेकिन ग्रन्थ साहबकी दृष्टिसे वे सच्चे सिक्ख होनेका दावा नहीं कर सकते। मैंने अुन भाअीसे पूछा कि आपकी नजरमें कोअी अैसा सिक्ख है ? वे अेक भी अैसा सिक्ख नहीं बता सके। तब मैंने नरमीसे कहा कि मैं अैसा सिक्ख होनेका दावा करता हूँ। मैं ग्रन्थ साहबके मानोंमें सच्चे सिक्खका जीवन बितानेकी कोशिश कर रहा हूँ। अेक समय था, जब ननकाना साहबमें मुझे सिक्खोंका सच्चा दोस्त करार दिया गया था। गुरु नानक

www.vinoba.in

मुसलमान और हिन्दूमें कोअी मेद नहीं मानते थे । अुनके लिअे सारी दुनिया अेक थी। मेरा सनातन हिन्दू धर्म अैसा ही है। सच्चा हिन्दू होनेके नाते मैं सच्चा मुसलमान होनेका भी दावा करता हूँ । मै हमेशा मुसलमानोंकी महान प्रार्थना गाता हूँ, जिसमें कहा गया है कि खुदा अेक है और वह दिन रात सारी दुनियाकी हिफाज़त करता है ।

गांधीजीने सब निराश्रितोंसे कहा कि आप सचाअी और निडरतासे रहें और साथ ही किसीसे वैर या नफ़रत न करें । आप गुस्सेमें बिना सोचे-समझे नादानी भरे काम करके महँगे दामों मिली आजादीके सुनहले सेबको फेंक न दें ।

नअी दिल्ली, १२-९-'४७

सरहदी सूबेकी खबरें

आज शामकी प्रार्थना-सभामें अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा, सरहदी सूबेसे जो चिन्ता पैदा करनेवाली खबरें मिल रही हैं, अुनसे मुझे अपार दुःख होता है। मैं अुस सूबेको अच्छी तरह जानता हूँ । हफ्तों मैंने अुस सूबेका दौरा किया है और मैं खान भाअियोंके घरमें पूरी सलामतीसे रहा हूँ । अिसलिअे मुझे सरहदी सूबेके भूतपूर्व मंत्री श्री गिरधारीलाल पुरीका तार पढ़कर अपार दुःख हुआ, जिसमें लिखा है कि अुन्हें और अुनकी पत्नीको (दोनों अच्छे कार्यकर्ता हैं) जल्दीसे जल्दी किसी सुरक्षित जगह हटा दिया जाय। अैसी खबरोंसे मेरा सिर शर्मसे झुक जाता है । आज जो सरकार वहाँ राज कर रही है अुसका और कायदे आज़मका यह देखनेका फर्ज़ है कि मुसलमानोंकी तरह वहाँके सब हिन्दू और सिक्ख भी पूरी तरह सुरक्षित रहें ।

गुस्सा पागलपनका छोटा भाअी है

सरहदी सूबेकी दुःखभरी घटनाओंकी निन्दा करते हुअे गांधीजीने लोगोंको समझाया, गुस्सा करनेसे कोअी नतीजा नहीं निकलेगा । गुस्सेसे बदलेकी भावना पैदा होती है, और आज बदलेकी भावना ही यहाँ की और दूसरी जगहकी भयंकर घटनाओंके लिअे जिम्मेदार है। दिल्लीकी घटनाओंका बदला पच्छिमी पंजाब या सरहदी सूबेमें लेकर मुसलमानोंको क्या फायदा होगा; या पच्छिमी पंजाब और सरहदी सूबेमें अपने भाअियोंपर होनेवाले जुल्मोंका बदला दूसरी जगह लेनेसे हिन्दुओं और सिक्खोंको क्या मिलेगा ? अगर अेक आदमी या अेक गिरोह पागल बन जाय, तो क्या सभीको पागल बन जाना चाहिये ? मैं हिन्दुओं और सिक्खोंको यह चेतावनी देता हूँ कि मारने, लूटने और आग लगानेके कामोंसे वे अपने ही धर्मोंका नाश कर रहे हैं। मैं धर्मका विद्यार्थी होनेका दावा करता हूँ। मैं जानता हूँ कि कोअी धर्म पागलपनकी सीख नहीं देता। यही बात अिस्लामके लिअे भी सच है । मैं सबसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने पागलपनके काम अेकदम बन्द करदें । आप आगे आनेवाली पीढ़ियोंको अपने बारेमें यह कहनेका मौका न दीजिये कि आपने आजादीकी मीठी रोटी खो दी, क्योंकि आप अुसे पचा न सके। याद रखिये कि आपने अिस पागलपनको बन्द न किया, तो दुनियाकी नजरोंमें हिन्दुस्तानकी कोअी कदर नहीं रह जायगी ।

बीती बातें भूल जाअिये

मैं दुनियाकी सबसे सुन्दर मसजिद जामा मसजिदमें गया था । वहाँ मुस्लिम मर्दों और औरतोंको बड़ी मुसीबतमें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ । मैंने दुखियोंको यह कहकर ढाढ़स बँधानेकी कोशिश की कि हर अिन्सानको अेक-न-अेक रोज मरना ही है । मरे हुअे लोगोंके लिअे रोना बेकार है । अुससे वे वापिस नहीं आ जायँगे । हर नागरिकका यह फर्ज़ है कि वह अिस बड़े देशके भविष्यको बचाये । बहुतसे मुसलमान दोस्त रोजाना मुझसे मिलने आते हैं। अुन्हें मैं यही सलाह देता हूँ कि वे अपनी हालतके बारेमें साफ-साफ बतायें । मुझे अुनसे यह सुनकर दुःख होता है कि दिल्ली या हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंमें मुसलमानोंकी जान खतरेमें है । अिससे बड़े दुखकी बात और क्या हो सकती है ? आप लोगोंसे मेरी प्रार्थना है कि आप मुझ बूढ़ेकी बातोंपर ध्यान दें, जिसने अपनी लम्बी जिन्दगीमें बहुतसे अनुभव किये हैं । मुझे अिस बातका पक्का विश्वास है कि बुराअीका बदला बुराअीसे चुकानेसे कोअी फायदा नहीं होता । भलाअीके बदले भलाअी करना भी कोअी खूबी नहीं है । बुराअीका बदला भलाअीसे चुकाना ही सच्चा रास्ता है । कअी मुसलमान दोस्त दिल्लीमें शान्ति और अमन कायम करनेके काममें मदद पहुँचाना चाहते हैं । लेकिन आजकी हालतमें दिल्लीमें अुनकी अमली सेवाओंसे फायदा अुठाना असंभव है ।

दिलपर गहरा असर डालनेवाले शब्दोंमें गांधीजीने सिक्खों, हिन्दुओं और मुसलमानोंसे अपील की कि वे बीती हुअी बातोंको भूल जायँ । वे अपनी मुसीबतोंका खयाल छोड़कर आपसमें दोस्तीका हाथ बढ़ायें और शान्तिसे रहना तय कर लें । मुसलमानोंको हिन्दुस्तानी संघके मेम्बर होनेमें गर्व अनुभव करना चाहिये । अुन्हें तिरंगेको ज़रूर सलामी देनी चाहिये । अगर वे अपने मज़हबके प्रति वफ़ादार हैं, तो अुन्हें किसी हिन्दूको अपना दुश्मन नहीं समझना चाहिये । अिसी तरह हिन्दुओं और सिक्खोंको शान्ति-पसंद मुसलमानोंका अपने बीचमें स्वागत करना चाहिये । मुझसे कहा गया है कि यहाँके मुसलमानोंके पास हथियार हैं । अगर यह सच है, तो अुन्हें वे हथियार तुरन्त यहाँकी सरकारको सौंप देने चाहियें और सरकारको अुनके खिलाफ़ कोअी कार्रवाअी नहीं करनी चाहिये । हिन्दुओं और सिक्खोंको भी, अगर अुनके पास हथियार हों, तो सरकारको सौंप देने चाहियें । मैंने यह भी सुना है कि पच्छिमी पंजाबकी सरकार वहाँके मुसलमानोंको हथियार बाँट रही है । अगर यह सच है, तो बुरी बात है, और आगे जाकर अिससे अुनकी ही बरबादी होगी । यह काम आगेसे बन्द होना चाहिये । कहीं भी किसीके पास बंदूक लायसेन्सका हथियार नहीं रहना चाहिये ।

आप लोगोंसे मेरी दरखास्त है कि आप जल्दी-से-जल्दी दिल्लीमें शान्ति क़ायम करें; ताकि मैं पूरबी और पच्छिमी पंजाब जानेके लिअे रवाना हो सकूँ । मेरे सामने सिर्फ़ अेक ही मिशन है और हरअेकके लिअे मेरा वही सन्देश है । आप अपने बारेमें दूसरोंको यह कहनेका मौका दीजिये कि दिल्लीके लोग कुछ समयके लिअे पागल हो अुठे थे, मगर अब अुनमें समझदारी आ गअी है । आप लोग अपने प्राअिम मिनिस्टर और डिप्टी प्राअिम मिनिस्टरको फिरसे अपने सिर अूँचे करनेका मौका दें । आज तो शर्म और दुःखसे अुनके सिर झुक गये हैं । आपको बेशक़ीमती विरासत मिली है । आपको याद रखना चाहिये कि अुसपर सबका सम्मिलित अधिकार है । आपका फ़र्ज़ है कि आप अुसकी हिफ़ाज़त करें और अुसे बेदाग़ बनाये रखें ।

राष्ट्रीय-सेवा-संघ

अन्तमें गांधीजीने राष्ट्रीय-सेवा-संघके गुरुसे अपनी और डॉ० दीनशा मेहताकी मुलाक़ातका ज़िक्र करते हुअे कहा — मैंने सुना है कि अिस संस्थाके हाथ भी खूनसे सने हुअे हैं । संघके गुरुजीने मुझे भरोसा दिलाया कि यह झूठ है । अुनकी संस्था किसीकी दुश्मन नहीं है । अुसका मक़सद मुसलमानोंको मारना नहीं है । वह तो सिर्फ़ अपनी ताक़तभर हिन्दू धर्मकी हिफ़ाज़त करना चाहती है। अुसका मक़सद शान्ति बनाये रखना है । अुन्होंने (गुरुजीने) मुझसे कहा कि मैं अुनके विचारोंको प्रकाशित करदूँ ।

विषय-सूची

		पृष्ठ
डॉक्टर जोशी	... सुशीला नय्यर	२७३
हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा	... अमृतलाल नाणावटी	२७४
गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण	...	२७४
सावधान !	... गांधीजी	२७६
बिहार बिहारियोंके लिअे और हिन्दुस्तान	... गांधीजी	२७६
नशीली चीजोंकी मनाअी	... गांधीजी	२७७
गांधीजीके अखबारी बयान	...	२७७
टिप्पणियाँ :		
मेरी मूर्ति !	... गांधीजी	२७३
मंत्रियोंकी जिम्मेदारी	... गांधीजी	२७३

www.vinoba.in